VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918171181080
+919068806410

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(11 September 2023)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- 'आपदा जोखिमों' को कम करने के दोगुने प्रयास करने की आवश्यकता है
- G20 में अफ़्रीकी संघ: G20 के नवीनतम सदस्य पर एक नज़र
- भारत में 50% से अधिक महिला आत्महत्या गृहिणियाँ करती हैं

'आपदा जोखिमों' को कम करने के दोगुने प्रयास करने की आवश्यकता है:

चर्चा में क्यों है?

- नई दिल्ली में हाल ही में हुए **जी20 शिखर सम्मेलन और न्यूयॉर्क में आगामी संयुक्त राष्ट्र महासभा SDG शिखर सम्मेलन में नेताओं ने** एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु पर प्रकाश डाला: **दुनिया एक महत्वपूर्ण क्षण का सामना कर रही है। जितनी समस्याएं और ख़तरे हम हल करने में सक्षम हैं उससे कहीं अधिक समस्याएं और खतरे उभर रहे हैं।**

- **संघर्ष, वित्तीय ऋण और खाद्य सुरक्षा की कमी जैसे अन्य संकटों के संयोजन के साथ, COVID-19 महामारी के परिणाम, इन मुद्दों को एक साथ संभालने की हमारी क्षमता को चुनौती दे** रहे हैं। यह सब तब हो रहा है जब जलवायु संकट के कारण चरम मौसमी घटनाएं बार-बार और अधिक तीव्रता से घटित हो रही हैं।

- सरल शब्दों में कहें तो, **हम एक मुश्किल स्थिति में हैं और बहुत सारी समस्याएं एक साथ आ रही हैं, और हमें उनसे निपटने के लिए मिलकर काम करने की जरूरत** है।

आपदाओं में वृद्धि केवल एक अस्थायी समस्या नहीं है:

- आपदाओं में जो वृद्धि हम देख रहे हैं वह केवल एक अस्थायी समस्या नहीं है; यह एक सतत प्रवृत्ति है।
- इस **वर्ष हमने लगातार बुरी ख़बरें देखी हैं,** चीन में विनाशकारी बाढ़ से लेकर यूरोप और हवाई में विनाशकारी जंगल की आग तक, **साथ ही जुलाई में रिकॉर्ड-तोड़ उच्च तापमान** तक।
- **यदि हम अधिक कार्रवाई नहीं करते हैं तो यह नया सामान्य वास्तविकता बन सकता है।**

आपदाओं से जुड़ी वैश्विक विडंबना:

- विशेष रूप से चिंता की बात **यह है कि जिन समुदायों और देशों का इन समस्याओं को पैदा करने में सबसे कम योगदान है, वे ही सबसे अधिक पीड़ित हैं।**
- **जलवायु परिवर्तन के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील 50 देशों में से कई महत्वपूर्ण ऋण मुद्दों से भी जूझ रहे हैं।**

- **भारत, जो पहले से ही दुनिया के सबसे अधिक आपदा-संभावित देशों में से एक है, इस नई वास्तविकता के प्रभाव को गहराई से महसूस कर रहा** है। 2022 में, देश को लगभग हर दिन आपदाओं या चरम मौसम का सामना करना पड़ा, और इस साल के गंभीर मानसून ने लोगों की आजीविका और जीवन दोनों को व्यापक नुकसान पहुंचाया है।

आपदाओं से निपटने के समाधान मौजूद हैं:

- एक अच्छी ख़बर यह भी है: **जलवायु परिवर्तन से निपटने और उसे कम करने, दोनों के लिए समाधान उपलब्ध हैं।**
- **सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी), ग्लोबल वार्मिंग को सीमित करने के लिए पेरिस समझौते की प्रतिबद्धताएं, और आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सेंडाई फ्रेमवर्क महत्वपूर्ण ब्लूप्रिंट प्रदान** करते हैं। सेंदाई फ्रेमवर्क को लागू करने में धीमी प्रगति के बावजूद, हाल की संयुक्त राष्ट्र प्रतिबद्धताओं का उद्देश्य लचीलापन निर्माण में तेजी लाना है।
- **कोविड-19 महामारी से कई सबक सीखे जा रहे हैं, जिसमें सिस्टम-व्यापी आपदा जोखिम में कमी**, लचीलापन और अनुकूलन का महत्व भी शामिल है। संकट ने न केवल जोखिम के प्रति हमारी संवेदनशीलता को उजागर किया, बल्कि साथ मिलकर

काम करने के नए तरीकों को भी जन्म दिया, **जिसमें कंप्यूटर मॉडलिंग और भारत की CoWIN डिजिटल वैक्सीन प्रणाली जैसे डिजिटल नवाचार शामिल** हैं।

आपदा समाधान में भारत की उपलब्धि एवं प्रयास का महत्व:

- आपदा जोखिम न्यूनीकरण में **भारत का नेतृत्व आशावाद का स्रोत है।**
- भारत के **सभी राज्यों ने आपदा प्रबंधन योजनाएं विकसित की हैं, जिससे चरम मौसम की घटनाओं से होने वाली मौतों में उल्लेखनीय कमी आई** है।
- भारत की **व्यापक चक्रवात पूर्व चेतावनी प्रणाली ने 15 वर्षों में चक्रवात से संबंधित मौतों को 90% तक कम कर दिया है,** और स्थानीय गर्मी की लहर कार्य योजनाओं ने गर्मी से संबंधित मौतों में समान कमी हासिल की है। गुजरात में हाल ही में आए **चक्रवात बिपरजॉय के परिणामस्वरूप प्रभावी तैयारियों, प्रतिक्रिया और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के कारण शून्य मौतें हुईं।**
- भारत में 15वें वित्त आयोग ने आपदा जोखिम वित्तपोषण में महत्वपूर्ण सुधार पेश किए। **पांच वर्षों की अवधि के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर 28.6 अरब डॉलर के कुल आवंटन के साथ,** भारत सरकार ने आपदा तैयारी, प्रतिक्रिया, पुनर्प्राप्ति और क्षमता विकास के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान किए हैं।

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, **भारत आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन जैसी पहलों के माध्यम से आपदा लचीलेपन को बढ़ावा देता** है।
- इसके अतिरिक्त, **भारत की जी20 अध्यक्षता ने साझा प्राथमिकताओं और सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के साथ संरेखित करते हुए एक आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्य समूह की स्थापना** की।

हमें किन परिवर्तनों की आवश्यकता है?

- **आपदा जोखिम को सभी स्तरों पर एकीकृत किया जाना चाहिए, हम कैसे निर्माण करते हैं, हम कैसे निवेश करते हैं और हम कैसे रहते हैं।**
- **सबसे अधिक लागत प्रभावी जोखिम** कम करने के तरीकों में से एक **भारत के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में सभी के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली** है। **आने वाले तूफ़ान की मात्र 24 घंटे की चेतावनी से होने वाले नुकसान को 30% तक कम किया जा सकता** है।
- फिर भी, **दुनिया की एक तिहाई से अधिक आबादी, ज्यादातर कम विकसित देशों और छोटे द्वीप विकासशील राज्यों में, ऐसी प्रणालियों तक पहुंच नहीं** है।
- अंतिम **लक्ष्य सभी प्रकार के खतरों, चाहे वह जैविक, टेक्टोनिक या तकनीकी हो, के लिए एक वैश्विक बहु-जोखिम चेतावनी प्रणाली** है।

- वैश्विक डेटा क्षमताओं में सुधार से हमें उन जोखिमों की भविष्यवाणी करने और उन पर प्रतिक्रिया देने में मदद मिलेगी जिनका हम सामना कर रहे हैं। **ज्ञान साझा करने, संयुक्त डेटा अवसंरचना और जोखिम विश्लेषण पर प्रगति के लिए भारत की G20 अध्यक्षता प्रशंसनीय है।**
- अंत में, यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि **कोई भी पीछे न छूटे**। हमें **आपदा की रोकथाम, प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति में विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना** चाहिए।
- **जी20 शिखर सम्मेलन और आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्य समूह** के नतीजे एक ऐसे भविष्य को डिजाइन करने का अवसर हैं **जहां हम आपदा जोखिम का सामना करने के लिए सुसज्जित** होंगे। जैसा कि **संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा**, ***"अत्यधिक मौसम की घटनाएं होंगी। लेकिन उन्हें घातक आपदा बनने की जरूरत नहीं है"***।

+918171181080
+919068806410
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

G20 में अफ़्रीकी संघ: G20 के नवीनतम सदस्य पर एक नज़र

चर्चा में क्यों है?

- अफ्रीकी संघ (AU) को शनिवार (9 सितंबर) को **G20 के नए सदस्य के रूप में शामिल किया गया**। यह विकास नई दिल्ली में चल रहे **18वें G20 राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों के शिखर सम्मेलन** में हुआ।

अफ्रीकी संघ (AU) क्या है?

- **अफ्रीकी संघ (AU) अफ्रीका महाद्वीप पर स्थित 55 सदस्य देशों का एक अंतर-सरकारी संगठन** है।
- **9 जुलाई, 2002 को लॉन्च किया गया यह समूह अफ़्रीकी एकता संगठन (OAU)** का उत्तराधिकारी है, जिसका गठन 1963 में हुआ था।

- यह अपने नागरिकों द्वारा संचालित **एक एकीकृत, समृद्ध और शांतिपूर्ण अफ्रीका का निर्माण करना चाहता है।**
- इसका **सचिवालय, अफ्रीकी संघ आयोग, अदीस अबाबा** में स्थित है।
- **लगभग 1.4 अरब लोगों के साथ समूह का कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 3 ट्रिलियन डॉलर** है।

AU का गठन क्यों किया गया था?

- AU का पूर्ववर्ती, OAU भी एक अंतर-सरकारी संगठन था और इसका उद्देश्य अफ्रीकी देशों को एक साथ लाना और सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से आम मुद्दों को हल करना था। हालांकि, **इसका मुख्य फोकस महाद्वीप पर औपनिवेशिक देशों को आजाद कराने में मदद करना** था। ऐसा करने के लिए, OAU ने राजनयिक समर्थन जुटाया और पूरे अफ्रीका में मुक्ति आंदोलनों को सैन्य सहायता प्रदान की।
- **OAU के प्रयासों से अगले वर्षों में कई अफ्रीकी देशों को अपने यूरोपीय उपनिवेशवादियों से स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद** मिली।
- लेकिन यह संगठन अपने सदस्य देशों के बीच **राजनीतिक और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने में विफल रहा।** इसलिए, **1990 के दशक के मध्य में OAU में सुधार करने का निर्णय लिया गया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः AU का गठन हुआ।**

AU के उद्देश्य क्या हैं?

- यह अपनी ऊर्जा और संसाधनों को **अफ्रीकी देशों और उनके लोगों के बीच अधिक एकता और एकजुटता हासिल करने पर केंद्रित करता** है।
- इसका **उद्देश्य महाद्वीप के राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया को तेज करना** है।
- इसके अलावा, **यह उन बहुमुखी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान करता है जिनका अफ्रीकी देश सामना कर रहे** हैं।
- इसके **प्रमुख उद्देश्यों में पूरे क्षेत्र में शांति, स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देना भी शामिल** है।

AU की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ क्या है?

- अफ़्रीकी संघ (AU) ने **साहेल और उत्तरी मोज़ाम्बिक सहित अफ़्रीका के विभिन्न क्षेत्रों में आतंकवाद से निपटने के लिए शांति मिशन** चलाए हैं।
- AU के हस्तक्षेपों ने **बुरुंडी, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, कोमोरोस, दारफुर, सोमालिया, दक्षिण सूडान, सूडान और माली सहित कई अफ्रीकी देशों में हिंसा को सफलतापूर्वक** रोका है।
- **अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र (AfCFTA) 2021 में शुरू हुआ और इसमें 54 सदस्य देश शामिल** हैं, जो **1994 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना के बाद से इसे दुनिया का सबसे बड़ा मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाता** है।

- **AfCFTA का लक्ष्य व्यापार उदारीकरण और नियामक सामंजस्य के माध्यम से अंतर-अफ्रीकी व्यापार को बढ़ावा देना** है।

AU की कमियां क्या रही हैं?

- AU की एक **विफलता अफ्रीका में तख्तापलट को विफल करने में असमर्थता रही** है। 1960 के दशक के बाद से, **इस महाद्वीप में 200 से अधिक तख्तापलट हुए हैं - सबसे हालिया तख्तापलट गैबॉन और नाइजर** में हुआ।
- स्पष्ट कारण यह है कि यह कभी भी विद्रोहियों को दबाने, उन्हें पकड़ने और उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाने के लिए सैन्य हस्तक्षेप नहीं भेजता है।

AU को G20 में शामिल करने का परिणाम क्या हो सकता है?

- AU के पास अब अपनी G20 स्थायी सीट का उपयोग करके **वैश्विक व्यापार, वित्त और निवेश वास्तुकला को फिर से डिजाइन करने की एक समझौताहीन मांग के साथ पूरी दुनिया के लिए एक जीत-जीत का मार्ग तैयार करने का अवसर** है।
- इस बीच, केन्या के **राष्ट्रपति विलियम रूटो ने कहा कि समूह के शामिल होने से अफ्रीकी हितों और दृष्टिकोणों को G20 में आवाज और दृश्यता मिलेगी।**

+918171181080
+919068806410
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत में 50% से अधिक महिला आत्महत्या गृहिणियाँ करती हैं:

चर्चा में क्यों है?

- 10 सितंबर को 'विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस' मनाया गया, एक पहल जो 2003 में इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्रकाश डालने, सामाजिक कलंक को कम करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए शुरू हुई थी।

- 2021 से थीम, 'क्रिएटिंग होप थ्रू एक्शन' का उद्देश्य आशा को प्रेरित करना और निवारक उपायों को मजबूत करना है।
- भारत में यह दिन गृहिणियों के बीच अक्सर नजरअंदाज की जाने वाली आत्महत्या की समस्या पर एक बार फिर ध्यान देने का आह्वान करता है।
- जब से भारत ने व्यवसाय के आधार पर आत्महत्या के आंकड़ों को वर्गीकृत करना शुरू किया है, गृहिणियां लगातार शीर्ष दो समूहों में स्थान पर हैं।

- यह प्रवृत्ति 2021 के लिए सच साबित हुई, सबसे हालिया वर्ष जिसके लिए डेटा उपलब्ध है।

भारत में गृहणियों में आत्महत्या के डरावने आंकड़े:

- भारत में **आत्महत्या से मरने वाली महिलाओं की संख्या 2021 में 45,026 के शिखर पर पहुंच गई। उनमें से आधे से अधिक गृहिणियां थीं।** कुल महिला **आत्महत्याओं में गृहिणियों की हिस्सेदारी पिछले कई वर्षों से 50% से ऊपर बनी हुई** है।
- **समग्र आत्महत्याओं में गृहिणियों की हिस्सेदारी भी कई वर्षों से 15% के आसपास बनी हुई है।**
- उल्लेखनीय रूप से **सभी आत्महत्याओं (पुरुषों और महिलाओं) में से 30% से अधिक परिवार या विवाह से संबंधित मुद्दों के कारण थे।**

राज्यवार एवं आर्थिक आधार पर आत्महत्या की स्थिति:

- **दक्षिण में आर्थिक रूप से बेहतर राज्य आत्महत्या दर की सूची में शीर्ष पर:** सामान्य तौर पर, **वर्षों से, दक्षिण में आर्थिक रूप से बेहतर राज्य आत्महत्या दर की सूची में शीर्ष पर रहे।**
- 2021 में, प्रमुख राज्यों में **केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और कर्नाटक** इस सूची में **शीर्ष पर** रहे।

उत्तरदायी सामाजिक-आर्थिक कारक:

- 2016 में, पीटर मेयर ने इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली में उल्लेख किया था कि अगर केवल गृहिणियों की आत्महत्या दर पर विचार किया जाए तो भी समान प्रवृत्ति बनी रहती है।
- उनका पेपर सुझाव देता है कि **सामाजिक भूमिकाओं, विशेष रूप से विवाह के बाद की अपेक्षाओं में बदलाव एक योगदान कारक** हो सकता है।
- **दक्षिण में**, जहां **महिला साक्षरता दर तुलनात्मक रूप से ऊंची है और महिलाओं की जनसंचार माध्यमों तक अधिक पहुंच है, वहां आधुनिक दृष्टिकोण और पारंपरिक सामाजिक मानदंडों के बीच टकराव होता** है। इसके विपरीत, **उत्तर में पारंपरिक उम्मीदों के खिलाफ दबाव कम स्पष्ट** है।
- **राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2019-21) विवाहित महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों पर प्रकाश डालता** है, जिसमें **सीमित गतिशीलता, प्रतिबंधित वित्तीय स्वायत्तता और वैवाहिक नियंत्रण के साथ-साथ उनके जीवनसाथी के हाथों शारीरिक, यौन और भावनात्मक शोषण शामिल** है।
- इससे **यह भी पता चलता है कि कई महिलाएं शायद ही कभी बाहरी सहायता लेती हैं और अपनी स्वतंत्रता पर हमले को चुपचाप सहन करती** हैं।
- इसके अतिरिक्त, आंकड़ों से पता चलता है कि **सबसे कम आय वर्ग की महिलाएं अमीर घरों की महिलाओं की तुलना में अधिक हिंसा और कम स्वतंत्रता का अनुभव करती** हैं।